शिक्षण की एक विधि के रूप में कहानी सुनाना

गायत्री

एकलव्य फ़ाउंडेशन के मोहल्ला लर्निंग ऐक्टिविटी सेंटर (MLAC) और सरकारी स्कूलों के साथ काम करते हुए हमें इस बारे में कुछ अन्तर्दृष्टि मिली है कि बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं और हम गीतों, कहानियों, लोककथाओं, कविताओं आदि के ज़रिए भाषा सीखने में कैसे उनकी मदद कर सकते हैं। यहाँ, मैं अपने कुछ अनुभव साझा कर रही हूँ कि कैसे कहानियाँ प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को सीखने के कई अपेक्षित परिणामों को हासिल करने में मदद करती हैं जैसे ध्यान से सुनना, बिना हिचकिचाहट के बोलना, किसी चित्र की तरफ़ ध्यान से देखना व उसकी व्याख्या करना, अपने जीवन और परिवेश पर आधारित अपने अनुभवों को साझा करते हुए उनका वर्णन करना और उसे साझा करना, सवाल करना, तर्क करना और तुलना करना। कहानी सुनाना भाषागत कौशलों के विकास में मदद करता है और यह स्कूली वातावरण तथा पाठ्यचर्या के साथ एक आसान कड़ी होता है।

कहानी सुनाना और भाषा

जब मैं कहानी कहने के लिए कोई क़िताब उठाती हूँ तो सबसे पहले बच्चों को चित्र दिखाती हूँ। क़िताब का शीर्षक सुनकर और चित्र देखकर उनके चेहरे पर जो ख़ुशी झलकती है वह अमूल्य होती है। कहानी सुनाना समावेशी होना चाहिए। प्रत्येक बच्चे की बात सुनी जानी चाहिए और इसमें उनकी हिस्सेदारी को सुनिश्चित करना चाहिए, अन्यथा उनका उत्साह जल्दी ही ठण्डा पड़ जाएगा।

> किसी कहानी पर चर्चा करने से बच्चों को भाषा के इस्तेमाल का ग़ज़ब का अवसर मिलता है। बच्चों को चित्र दिखाना, उनके बारे में बात करना, सवाल पूछना और उनके उन अनुभवों को सुनना जो कहानी से मेल खाते हों, यह सब भाषा के विकास में निर्णायक तत्व होते हैं। यह भी देखा गया है कि जब कक्षा में सभी बच्चे साथ में बात करते हैं तो अपने आपको अभिव्यक्त करने में हिचकिचाने वाले बच्चे भी बात करने में सहज महसूस करते हैं।

बच्चों के लिए लोककथाएँ ख़ासतौर पर उपयुक्त होती हैं क्योंकि वे रोज़मर्रा के जीवन, ज़रूरतों, प्रकृति व संघर्षों का प्रतिनिधित्व करती हैं और बच्चे उन्हें अपने इर्द-गिर्द के माहौल से जोड़ सकते हैं। होशंगाबाद के एक प्राथमिक स्कूल में कक्षा-1 से 3 तक के बच्चों को ख़ूबसूरत चित्रों वाली एक लोककथा *शलजम* (Turnip, Eklavya) सुनाई गई। मैंने बच्चों को चित्र दिखाए और उनसे पूछा कि उन्होंने क्या-क्या देखा। उन्होंने उत्तर दिया - पेड़, पौधे, सड़कें, घर, खेत, नदियाँ, झोपड़ियाँ, पहाड़, इन्सान, जानवर, फूल आदि। उन्होंने फूलों के नाम भी बताए - गेंदा और शेवन्ती। जब सभी बच्चे बोल रहे थे तब कक्षा-1 के एक बच्चे ने तीन चिड़ियों की ओर इशारा किया जिन पर किसी अन्य की नज़र नहीं गई थी।

एक कहानी का परिचय देना

कोई कहानी सुनाने से पहले उससे सम्बन्धित सभी मुद्दों की चर्चा करना मुझे उपयोगी लगता है क्योंकि इस तरह से हम बच्चों को कहानी सुनाते हुए उनके आस-पास की तमाम चीज़ों से परिचित करा सकते हैं। इसके साथ ही बच्चों के अनुभवों को भी कक्षा में शामिल किया जा सकता है और आगे जो काम दिए जाने हैं (चर्चाओं व गतिविधियों सहित) उसे उनके द्वारा सुझाए गए विचारों पर केन्द्रित किया जा सकता है।

जब मैंने यह पूछा कि क्या किसी ने शलजम देखा है और यह कैसा दिखता है तो बहुत-से बच्चों ने अपना हाथ उठाया। कुछ बच्चों को लगा कि यह प्याज़ की तरह दिखता है। कुछ ने कहा कि यह मूली या गाजर की तरह होता है। कुछ ने इसे पत्ता गोभी जैसा बताया और एक बच्चे ने तो इसे बैंगन जैसे बैंगनी रंग का बताया। इससे एक और सवाल खड़ा हुआ। क्या किसी ने शलजम को उगते हुए देखा है? दो या तीन हाथ ऊपर उठे। कक्षा-3 के आर्यन ने कहा, "ज़मीन के अन्दर होता है।" मैंने पूछा, "ज़मीन के अन्दर और क्या पैदा होता है?" "गाजर, मूली, मूँगफली और एक ऐसी चीज़.....जो खून की तरह लाल रंग की होती है...हाँ...चुकन्दर, आलू, प्याज़, लहसुन", बच्चे एक साथ चिल्लाए।

"मुझे बताओ कि क्या तुमने पहले कभी शलजम खाए हैं और कैसे खाए हैं? कच्चे या पकाकर?" और मुझे पता चला कि बहुत कम बच्चों ने शलजम खाया था।

एक बच्चे के अनुसार इसे काटकर रोटी के साथ खाते हैं। एक दूसरे बच्चे ने इसे कच्चे सलाद की तरह खाया था। तीसरे बच्चे ने बताया कि उसने इसे रसेदार सब्ज़ी के रूप में खाया

था। एक अन्य बच्चे ने बताया कि उसकी माँ ने शलजम और मटर का अचार बनाया था और उन्होंने उसे दाल-चावल के साथ खाया था। इससे एक चर्चा शुरू हो गई। मेरा अन्तिम सवाल था, "ठीक है, मुझे बताओ कि तुमने कौन-कौन सा अचार खाया है?"

बच्चे आम, नींबू, आँवला, मिर्च, कटहल, मछली और हल्दी के अचार के बारे में बात करने लगे। चर्चा को बढ़ाते हुए मैंने जोड़ा कि मैंने लहसुन, अदरक, मशरूम, लाल मिर्ची, करौंदे का अचार और गाजर, गोभी, शलजम तथा मटर का मिक्स अचार खाया है। बच्चे करौंदा से परिचित नहीं थे, इसलिए मैंने गूगल किया और करौंदे का पेड़ और उसका फल उन्हें दिखाया।

अभी तक हम कहानी के पास भी नहीं पहुँचे थे। समूची चर्चा अभी शलजम पर ही टिकी थी। मैंने बच्चों को एक-एक करके कहानी के सारे चित्र दिखाए और उनसे कहानी का अनुमान लगाने को कहा। बच्चों ने हर एक चित्र और उगती हुई दिखाई गई सब्ज़ियों पर ख़ूब बातें कीं। उन्होंने हर एक चित्र को ध्यान से देखा - एक दूध वाला, नल खोलती एक लड़की, खेत में पानी डालते दादाजी, एक ठेले पर सब्ज़ी इकट्ठा करती दादी आदि।

पन्ने पलटते हुए हम कहानी के उस हिस्से में पहुँचते हैं जहाँ दादा, दादी को पुकारते हैं क्योंकि वे एक शलजम को ख़ुद खोदकर नहीं निकाल पा रहे थे। चूँकि दादी भी उसे नहीं निकाल पाईं तो उन्होंने लड़की को आवाज़ दी। जब मैंने पूछा, क्या शलजम अब बाहर आ जाएगा तो सभी बच्चों के जवाब हाँ में थे क्योंकि उन्होंने कहा, कि लड़की अपने दादा-दादी से ज़्यादा ताक़तवर है। एक बच्ची ने मुझसे कहा कि उसके घर में भी उसके पापा उन चीज़ों को खिसका लेते हैं जिन्हें उसके दादाजी नहीं हटा पाते। हालाँकि, जब बच्चों ने अगले पेज पर चित्र देखा तो उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि शलजम तो अभी भी बाहर नहीं आया था। उन्होंने कहा कि चूँकि यह बहुत मज़बूती से धँसा हुआ है, इसलिए इसे निकालने के लिए शायद बहुत अधिक ताक़त की ज़रूरत है। उन्होंने देखा कि खच्चर, मुर्गी और चूजे इस दृश्य पर हँस रहे थे। फिर, लड़की ने खच्चर को बुलाया और उसने शलजम बाहर निकालने में मदद करने के लिए लड़की की चुटिया पकड़ ली। एक-एक करके खेत के सारे जानवर शलजम को बाहर निकालने के काम में जुट जाते हैं। वे एक-दूसरे को कसकर पकड़े रहे, जब तक कि शलजम बाहर नहीं निकल गया।

सभी बच्चे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे क्योंकि उन्होंने चित्र में देखा कि शलजम के बाहर आते ही सभी एक-दूसरे पर गिर पड़े।

मैंने उनसे पूछा कि कैसे एक छोटा-सा चूहा शलजम को खींचकर बाहर निकाल सकता है जबकि इतने सारे लोग मिलकर ऐसा नहीं कर पा रहे थे। एक बच्चे को लगा कि चूहे ने जड़ को कुतर दिया था, इसीलिए वह अन्ततः बाहर आ सका या शायद उसकी मदद उसके किसी दोस्त ने की होगी।

सुनाने के बिना भी केवल चित्रों को देखते हुए हमारी कहानी यहीं पर समाप्त हो गई। हालाँकि मैंने कहानी के पात्रों (शलजम, बूढ़ा आदमी, बूढ़ी महिला, लड़की, खच्चर, कुत्ता, बिल्ली और चूहा) के रूप में कुछ बच्चों को तैयार करके इसे फिर से प्रस्तुत किया। बच्चे अपनी आँखों के सामने कहानी को घटित होते देखकर बहुत ख़ुश हुए। कहानी के अनुसार सब एक-दूसरे के ऊपर गिर गए और जानबूझकर हाथापाई करने लगे।

सोच-विचार में सहायता के लिए सवालों का इस्तेमाल

मैंने विद्यार्थियों से पूछा कि क्या कहानी की घटनाओं या उसके अन्त के बारे में उनके पास कोई सवाल या चिन्ताएँ हैं? इससे यह जानने में मदद मिलती है कि कहानी सुनने के बाद उनके विचार क्या बनते हैं।

मेरा मानना है कि कहानियों पर इस तरह की बातचीत जहाँ भाषा के विभिन्न आयामों को खोलती है वहीं एक ही समय में हमें कई तरह के विषयों को छूने का अवसर भी प्रदान करती है। कहानी को लेकर बच्चों की पसन्दगी और नापसन्दगी के बारे में उनसे बात करना उनकी भागीदारी को बढ़ाता है, जैसे कहानी का कौन-सा हिस्सा उन्हें पसन्द नहीं आया या किस चीज़ को बेहतर बनाया जा सकता है। इसका प्रभाव स्पष्ट तौर पर महसूस किया जा सकता है। जैसा कि यहाँ देखा गया, बच्चों ने स्वतःस्फूर्त तरीक़े से क़रीब-क़रीब हर चित्र पर कम-से-कम एक लाइन सोचने और उसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया।

कहानी की किताबों का सबसे अच्छी तरह से उपयोग

हमारा यह अनुभव रहा है कि शिक्षकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह निर्णय करने की होती है कि कहानी की किताबों का कब और कैसा इस्तेमाल करना है क्योंकि उनके ऊपर पाठ्यक्रम को पूरा करने का लगातार दबाव बना रहता है। शिक्षकों का सुझाव था कि हम उनके स्कूल आएँ और कहानी की किताबों के साथ गतिविधि करें और उन्हें ऐसे सुझाव दें जिनका वे अनुसरण कर सकें। हमने इन स्कूलों के लिए पढ़ने के मेले आयोजित किए। पढ़ने के इन मेलों में कहानी सुनाने, दिए गए शब्दों और चित्रों को किताबों में खोजने, क़िताब के बारे में कोई संकेत (उसका रंग, चित्र, नाम) देते हुए जल्दी

से उस क़िताब को ढूँढ़कर लाने जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं ताकि बच्चों को सीखने के उनके अपेक्षित परिणामों तक पहुँचने में मदद मिल सके।

इस पूरी प्रक्रिया का लक्ष्य भाषा सीखने में कहानी सुनाने के महत्त्व को दर्शाना था। साथ ही इन गतिविधियों में शिक्षकों की भागीदारी को सुनिश्चित करना था ताकि हाव-भाव, बातचीत व समझ के ज़रिए कहानी कहने में होने वाली उनकी हिचक को तोड़ा जा सके। इसका परिणाम यह हुआ कि जब मैं अगली बार उस स्कूल में गई तो बच्चों ने मुझसे कहा कि उन्होंने वे सारी किताबें पढ़ ली हैं जो मैंने उन्हें दी थीं। कुछ कहानियाँ उनके शिक्षकों ने उन्हें सुनाईं, जबकि कुछ उन्होंने ख़ुद ही अपने ख़ाली समय में पढ़ लीं। उन्होंने हमसे और किताबें देने का अनुरोध किया। बच्चों को अब कहानी की किताबों से प्यार हो गया है!

बच्चों के हित को दिमाग़ में रखते हुए हम कहानी सुनाने के ज़रिए बच्चों के सम्प्रेषण कौशलों को सजीव व मज़बूत बनाने के लिए कई रोचक तरीक़े खोज सकते हैं। कहानी में आगे क्या होने वाला है इसका अनुमान लगाते हुए बच्चे लगातार भाषा के नियमों से परिचित होते जाते हैं। प्राथमिक स्कूल के शुरुआती वर्षों में बच्चों को पढ़ना सीखने में सहायता करने के लिए कहानी सुनाना एक बहुत ही लाभदायी और आकर्षक गतिविधि हो सकती है।

चित्र-1 : *किताब का लुत्फ उठाना सीखते हुए बच्चे।*

गायत्री होशंगाबाद में एकलव्य फ़ाउंडेशन की चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी में कई सालों तक काम कर चुकी हैं। वे वर्तमान में होशंगाबाद ब्लाक में जश्ने तालीम प्रोजेक्ट के तहत सरकारी स्कूलों में शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रिया पर बच्चों, शिक्षकों और समुदाय के साथ काम कर रही हैं। उन्हें बच्चों के साथ समय गुज़ारना और उनके साथ हुए अपने अनुभवों को लिखना पसन्द है। उनसे *gayatri@eklavya.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय